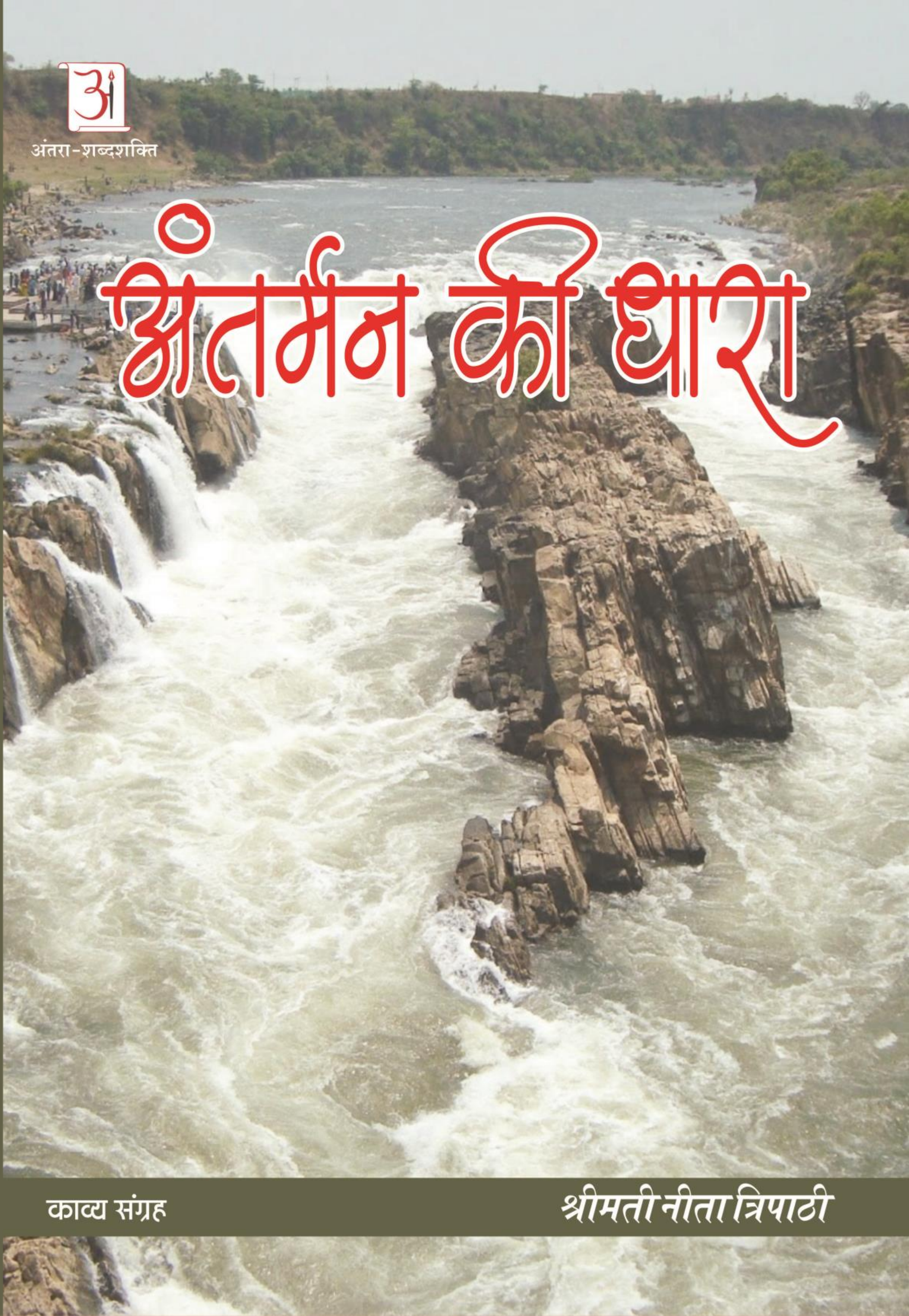

अंतरा-शब्दशक्ति

अंतर्मन की धारा

काव्य संग्रह

श्रीमती नीता त्रिपाठी

अंतर्मन की धारा

(काव्य संग्रह)

नीता त्रिपाठी 'परिणीता'

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

ISBN- 978-93-86666-40-6

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

मुख्य कार्यालय - १५ नेहरु चौक वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१

शाखा- एस-२०७, नवीन भवन, इंदौर प्रेस क्लब परिसर, इंदौर (म.प्र.) ४५२००१

दूरभाष- (कार्या.) ०७६३३-२५३१५९ (मो) ९४२४७६५२५९

अणुडाक- antrashabdshkti@gmail.com

अंतरताना- www.antrashabdshakti.com

प्रथम संस्करण २०१८ - नीता त्रिपाठी
मूल्य - ४०.०० रुपये
आवरण चित्र- संदीप सोनी, वारासिवनी
मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

Antarman ki Dhara by Neeta Tripathi

वैधानिक चेतावनी - इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरुत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

भावानुभूति

समाज में कार्य करते हुए स्वभाविक रूप से कभी कोई व्यक्ति, घटनाएं, प्रसंग एवं कथन अन्तर्मन को छू जाता है तथा अन्तर्मन की संवेदना शब्द के रूप में बाहर आते हैं। संवेदनाएं प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से सामाजिक अनुभूति के जीवन्त भावों और कार्य ब्यवहार की कसौटी पर मूल्यांकित किए जाते हैं, फलस्वरूप अतीत, वर्तमान और भविष्य तीनों के प्रति एक दायित्व के भाव का सृजन होता है। उन्हीं समस्त भावों को सहेजे हुए " अन्तर्मन की धारा " आप सभी सुधी पाठकों के समक्ष इस विनम्र-निवेदन के साथ, आप सभी के बहुमूल्य सुझावों की प्रत्याशा में प्रस्तुत है।

"अन्तर्मन की धारा" पुस्तक की उद्भमस्थल में मैं हूँ लेकिन मेरी यह पुस्तक मेरे परिवार मेरे पति, मेरे बड़े भाईसाहब व मित्रों के आग्रह और मेरी अनुभूतियों का संगम है।

“अन्तर्मन की धारा" बन कर बारह काब्य रचनाएं प्रवाहित हो रही है।

"अन्तर्मन मन की धारा” को आप सभी श्रेष्ठ पाठकों तक पहुँचानें में सतत प्रयत्नशील प्रकाशन की योजना बनाने वाले महानुभावों का मैं हृदयतल से आभार ज्ञापित करती हूँ।

धन्यवाद

नीता त्रिपाठी 'परिणीता'

अनुक्रमणिका

माँ शारदा स्तुति	5
नींव बने मातृभाषा	6
शिक्षा-उत्थान	7
अस्तित्व	8
वृक्ष की व्यथा	9
मन की पीड़ा	10
संस्कृति की दुर्दशा	11
भारत का गौरव-गान	12
शिक्षा का व्यापार	13
जन-जागृत हो	14
व्यथित मन	15
हृदय की गहराई	16

माँ शारदा स्तुति

हे ज्ञान निधे! सब जन- जन में,
विद्या की ज्योति जला दो,
माँ हमको ज्ञान से भर दो,
ऐसा उद्बोधन कर दो।।
सबके जीवन में शान्ति रहे,
मन में सेवा का भाव जगे,
वसुधा का कण-कण हे -माता,
मानवता का अनुसरण करे,
माँ-भारती के इस प्रांगण में,
तुम प्रेम की धार बहा दो,
माँ हमको ज्ञान से भर दो,
ऐसा उद्बोधन कर दो।।
ऐसी कृपा करो महिमामयी,
काव्य-सुधा का रस बरसे,
दूर हो मन का अंधियारा,
उर में नव-ज्ञान के दीप जले,
हो उज्ज्वल अब राष्ट्र हमारा,
ऐसी ज्योति जगा दो,
माँ हमको ज्ञान से भर दो,
ऐसा उद्बोधन कर दो।।

नींव बने मातृभाषा

सात स्वरों से सजे गीत को, मातृभाषा में हम गाएं।
निज भाषा में ज्ञानार्जन कर, स्वयं ही मंजिल पाए।

संस्कार की नींव सदा, अपनी भाषा में ही डालें।
त्यागें अंग्रेजी के दासत्व को, मातृभाषा को स्वामी बनाएं।

कोटी- कोटी अनुयायी बनकर,निज भाषा का परचम लहराएं।
जगत गुरू के सिंहासन पर, मातृभाषा को बिठायें।

नई सृष्टि के नए प्रहरी, निज भाषा बन कर उभरे।
तुमको है शत बार नमन,मातृभाषा की स्थिति सुधरे।

अपनी संस्कृति का रक्षण कर, शिशु का सर्वागीण विकास करें।
मातृभाषा सर्वोच्च हमारा, जन- जन यह गुणगान करे।

पढ़े दूसरी भाषाओं को, निज भाषा को हम ना भूलें।
निज भाषा को लक्ष्य बना कर,संघर्ष शिखर को नर छू ले।

शिक्षा- उत्थान

चलो पुन:रोपण करें,
रमणीय शिक्षा वृक्ष का,
नैतिक मूल्यों को अंकुर कर,
शिक्षा से हो उत्थान देश का।।

अब आशा है इक शिक्षक से
अपने दायित्व को पूर्ण करे,
घर -घर शिक्षा की ज्योति जले,
विद्या के घर में ज्ञान मिले।।

मानव का श्रृंगार है शिक्षा,
ज्ञान-गुणों का मान है शिक्षा,
सभ्य बनाती नर को शिक्षा,
निज कर्तव्य सिखाती शिक्षा

शिक्षा जगत की देख दुर्दशा,
शिक्षक कष्ट-कण्टकों के पथ चला,
शिक्षा क्षेत्र को लक्ष्य बनाकर कर,
जग को राह दिखाने चला।।

ऐसी शिक्षा मिले सभी को,
जिससे जन का हो उद्धार,
संस्कृति दूत बने शिक्षा की,
शिक्षार्थी का हो उत्थान।।

अस्तित्व

जीवन इक बिखरी मिट्टी है,
तुम इसका स्वरूप बनाओ,
संघर्षो के इस सफ़र में,
तुम अपना प्रतिरूप बनाओ।।

कब दिन आया कब रात गई,
ये पता नहीं चल पाता है,
आते -जाते संध्या प्रभात,
जीवन सूरज ढल जाता है।।

यह समाज एक दर्पण जैसा,
तुम सरस, सुन्दर प्रतिबिम्ब हो,
बिधटित होते जीवन मूल्यों के
उज्जवल भविष्य स्तम्भ हो।।

इस समाज के गौरव तुम,
अदभुत अमिट निशानी हो,
प्रात: स्मरणीय पूज्य तुम,
अजर -अमर बलिदानी हो।।

जीवन की राह कठिनतम् है,
नई दिशा में दीप जलाओ,
बहुरंगी -बहुबिध समाज में
अपना तुम अस्तित्व बनाओ।।

वृक्ष की व्यथा

क्या कहते हैं ये वृक्ष सुनो,मैं परहित के लिए बना,
चलते राही को छाया दूँ,मैं मधुर फलों से रहूँ लदा,।।

काट रहे हो पेड़ निरंतर,तुमको संकट का भान नहीं,
गर वृक्ष धरा पर नहीं रहेसुखमय जीवन संसार नहीं।।

नित दम धुटता है प्रकृति का,और साथ ही जीव -जन्तु का,
मानुष हैं इसका अपराधी,पेड़ काट निर्जन वन कर दी।।

सिमट गए हैं बाग-बगिचे,सिकुड़ गई हैं नदियाँ सारी,
जहरीला समीर बहे जब,जग में फैला भीषण बीमारी।।

विनाश औ विध्वंस का आलम,अपने हाथों तुमने सिरजा,
बदलो इसको निर्माण में तुम,करके पर्यावरण सुरक्षा।।

स्व जीवन के तुम अपराधी,वातावरण को किया प्रदूषित,
सुख, भोग-विलास के साधन ने, जीवन को बना दिया है भक्षित।।

मन की पीड़ा

जिधर देखती हूँ उधर है अँधेरा,
सभी देखते केवल खुद का सवेरा।
लोग असली चेहरा छुपाए हुए हैं,
मन में इच्छा की ज्योति जलाए हुए हैं।।

सभी जलन -ज्वाल में जल रहे हैं,
ये नर टीस-पीड़ा में भी पल रहे हैं।
जीवन-मरण दोनों हैं अपने
मत देख मानुष छलावा के सपने।।

घायल, पीड़ित, बेहाल मानव के लिए
सेवा कर मानवता को मृत्यु से बचाने के लिए।
आवश्यकता है नैतिकता का भाव जगाने की
निराश मन में आशा की लौ जलाने की।।

सभी मन के घावों से पीड़ित यहां हैं
सभी आहों में जी रहे यहां हैं
सभी अपने जीवन में उलझे हुए हैं,
दिखाते है सबको की सुलझे हुए हैं।।

संस्कृति की दुर्दशा

भले देश आजाद हो गया,राजनैतिक रूप से,
हम गुलाम हो गए,राष्ट्र की संस्कृति भूल के।।

फस गई संस्कृति हमारी,पश्चिमी जंजाल में,
हो गई एकता खंडित,आन्तरिक संग्राम में।।

है अनन्त, अखंड प्रकाशित,भारत-संस्कृति पावन गरिमा,
सदा चेतना भरे सत्य की, दिव्य-संस्कृति की महिमा।।

भूले जन-साधारण देश के,जो संस्कृति की रक्षा करते
भौतिकवादी के प्रवृत्ति में,निज-जीवन को बहने देते।।

नष्ट हो गई अपनी संस्कृति, कैसा यह स्वतंत्र है भारत?
इससे तो परतंत्र भले थे, संस्कृति की गरिमा है आहत।।

टुट-टुट कर बिखर रही है, अपनी संस्कृति की कड़ियां,
टूट रहे हैं संस्कार सब, जन-जीवन में बढ़ी दूरियां।।

संस्कृति-धर्म को भूल गए हम,पश्चिम सभ्यता को अपनाया,
व्यक्ति- व्यक्ति में स्नेह नहीं अब,रिस्ते में रह गया दिखावा।।

स्व-संस्कृति के मूल मंत्र को,जन- जीवन फिर से अपनाता,
इसी भाव से राष्ट्र हमारा, विश्वगुरु सम्मान को पाता।।

एक बार फिर से गूंजेगा,भारतीय संस्कृति का गर्जन,
खंडित संस्कृति को जोड़ेगे, पश्चिम-संस्कृति का कर मर्दन।।

भारत का गौरव-गान

मातृभूमि के वलि-वेदी पर,अर्पित हुई जवानी।
भारत-वर्ष की आजादी में,जिसने लिखी कहानी।।

जंजीरों में जकड़ी माँ को,राष्ट्र के वीरों ने देखा
तनिक विलम्ब भी नहीं किया,बदली भारत की रेखा।।

देखा वसुधा को विपदा में,जीवन त्याग का भाव जगा
भारत-वर्ष के हर कोने से,निकला वीरों का जत्था।।

माँ - भारती के नौनिहाल,सब हस्ते-हस्ते जेल गए
भारत की रक्षा के ख़ातिर,स्वयं जान पर खेल गए।।

आजादी की खुशी का दीपक,वीरों ने देश में जला दिया
लाख यातना सह कर भी,भारत की गरिमा बचा लिया।।

आजादी के रखवालों ने,चूम लिया फांसी का फंदा
दिल्ली के उस लाल किला पर,भारत ने फहराया झंडा।।

गर्व आज करते हैं उन पर,उनकी गौरव-गान पर
श्रद्धा-सुमन स्वीकारों वीरों,आजादी की शाम पर।।

शिक्षा का व्यापार

क्यों शिक्षा हो गई भ्रष्टाचारी,
आज पूछ रहा हैं शिक्षाधारी
शिक्षा एक अध्यात्म रूप है,
दिब्य कर्म भक्ति स्वरूप है।।

शिक्षा क्षेत्र व्यापार बन गया
कौन नहीं इससे है परिचित
मेधा भटक रही सड़कों पर
नेता घर में रहें सुरक्षित।।

मूर्ख बनाते ये जन- जन को
मीठी वाणी, कर्म घिनौने
अपराधी को दंडित करके
न्याय करें शिक्षा के घर में।।

छात्रों का भविष्य सुन्न अब
कहां छुपा है आज प्रशासन
भ्रष्ट आचरण की असीमता
क्रोध ज्वार से भरा तरूण मन।।

जन-जागृत हो

वसुधा पर हम दिनकर बनकर,
अंधकार को दूर भगायें,
मातृभूमि की शक्ति बनकर,
राष्ट्र-धर्म का पाठ पढ़ायें।।

भिन्न -भिन्न भाषा है जग में,
पर भाव एकता जीवित रहे,
इस धरती के पुत्र सभी हम,
मानवता के लिए जगे।।

शिक्षा-ज्ञान से जो वंचित हो,
पिछड़े जन का उत्थान करें,
जाति-धर्म का भेद मिटे अब,
ऐसा हम व्यवहार करें।।

जन- जागृत हो लक्ष्य हमारा,
राष्ट्र -प्रेम का भाव भरे,
स्वावलम्बिता की शिक्षा ले,
जीवन का पथ आदर्श बनें।।

व्यथित मन

क्यूँ व्यथित हो रहा है ये मन, लहरों सा ये लहराता है
कभी उड़ता है उन्मुक्त गगन,क्यूँ व्यथित हो रहा है ये मन।

इस चित पे किसी का राज नहीं,जिस राह चले कोई साथ नहीं
मन स्वयं में है इक सिंहासन,क्यूँ व्यथित हो रहा है ये मन।

कभी हर्षित हो कर गाता है,कभी शान्त पीड़ित हो जाता है
कभी निर्मल-निर्झर पवन सी,इच्छा की बयार बहाता है
देता है मनुष को शान्ति-अमन,क्यूँ व्यथित हो रहा है ये मन।

इस मन का कोई इक रूप नहीं,कोई भेद-भाव कहीं द्वेष नहीं
यह प्रेम का अमृत झरना है,जीवन का सुन्दर सपना है
करता जन-जन का चूर अहम, क्यूँ व्यथित हो रहा है ये मन।।

हृदय की गहराई

कवि हृदय की गहराई से,वेदना की लहर आयी
दुःख-भय से आहत समाज में,ये कैसी घटा है छायी।।

है कोई प्रहरी यहां पर,आज इसको दूर करदे
टूटते नैतिक मूल्यों को,तरूण की ऊर्जा से भरदे।

संस्कृति साक्षी है भारत की,जो भी याचक दर पर आया
स्वयं कष्ट सह कर भी हमने,स्नेह से उसको गले लगाया।

युग भेज रहा संदेश तुम्हें,फिर क्यूं दिगभ्रमित हो जाते हो
इस भारत माँ के वक्ष पर,क्यों घृणा-द्वेष फैलाते हो।।

बीत रहा है वर्तमान,कल होगा नया सवेरा
एक नये आरंभ में,प्रहरी तेरा है बसेरा।।

इस सुंदरतम सपने को,आज तुम साकार कर दो
भय व्यापित इस वर्तमान को,उज्जवल भविष्य का नाम दे दो।

व्यक्तित्व दर्पण

नाम - श्रीमती नीता त्रिपाठी

जन्म - 08 नवम्बर 1979, लखनऊ (उ.प्र.)

शिक्षा - परास्नातक भूगोल, बी.एड.

मो. - 9717069405

ई मेल - Amitneeta1234@gmail.com,
neetagtripatih@rediffmail.com

प्रकाशन - 'ओम', 'जान्हवी' एवं विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं एवं दैनिक समाचार पत्रों में विविध विषयों पर प्रासंगिक लेख व कविताऐं प्रकाशित।

यदि आप अंग्रेज़ी में हस्ताक्षर करते हैं तो निवेदन है कि 'हिन्दी में हस्ताक्षर करें', आपकी यह छोटी-सी कोशिश हिन्दी को राजभाषा से राष्ट्रभाषा बनाने में अमूल्य योगदान देगी ।

मातृभाषा वैचारिक महाकुम्भ
www.matrubhashaa.com

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

१५, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी,
जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१,
संपर्क- ९४२४७६५२५९,
अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com

978-93-86666-42-0

मूल्य- 40/-